परमात्मा से सर्व संबंधों की अनुभूति करें : दादी रत्नमोहिनी जी

आबू पर्वत, **ज्ञानसरोवर**,०६ जून २०१५। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं इसकी भगिनी संस्था आर ई आर एफ के मीडिया प्रभाग द्वारा योग एवं आध्यात्म की प्रगति में मीडिया की भूमिका विषय पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन दीप प्रज्वलित करके संपन्न हुआ।

अतर्राष्ट्रीय ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका **दादी रत्न मोहिनी जी** ने अपना आर्शीवचन इन शब्दों में दिया। आपने कहा कि लोग परमात्मा को अपना पिता तो मानते हैं मगर क्या उनके साथ वास्तविक पिता पुत्र के संबंधों की अनुभूति भी कर पाते हैं? संस्कार निर्माण में हमारे कर्मों की बड़ी भूमिका है। कर्म ही मुख्य है अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने के लिये।

आपको मालूम हो कि अब कलियुग अंतिम अवस्था पर आ पहुँचा है। अब अंत आने की वाला है। इसी समय परमात्मा अपने अवतरण के पश्चात नई दुनियाँ की स्थापना का कार्य कर रहे हैं और हम सभी को आध्यात्म एवं राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं । इसको व्यावहारिक रूप से अपना कर हम अपनर जीवन श्रेष्ठ बना लें।

भारतीय प्रेस परिषद के अध्यक्ष **न्यायमूर्ति सी के प्रसाद** ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार प्रकट किये। आपने कहा कि मुझे खुशी है कि आपने यह सम्मेलन आयोजित किया है। आपने कहा कि भारत वर्ष ही दुनियाँ के मुख्य धर्मों का जन्म स्थान है। दुनियॉ भर के लोग मानसिक शांति की प्राप्ति के लिये यहाँ आते हैं। आध्यात्म ने भारत के हर वर्ग के जीवन को छुआ है। योग दुनियाँ को आपस में जोड़ता है। उनमें करुणा एवं दया के भाव पैदा करता है। योग से हम मन को अपने वश में रख पाते हैं। इससे हमें अनेक बीमारियों से भी मुक्ति मिलती है। योग एवं आध्यात्म को अपनाकर कोई भी व्यक्ति समाज पर उपकार कर सकता है। आपने मीडिया कर्मियों से अपील की कि वे समाज में योग एवं आध्यात्म के प्रचार प्रसार के लिये काम करें।

कुशा भाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय,रायपुर के **कुलपति डॉ एम एस परमार** जी ने विशेष अतिथि के रूप में आज के सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी मानसिकता कुछ ऐसी हो गई है कि हम बातों को तब तक स्वीकार नहीं करते जब तक कि वह विदेश से होते हुए हमारे पास नहीं आता। यह एक विचित्र स्थिति है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में हम यही तो करते हैं और मीडिया के लोग भी ऐसा कर सकते हैं। सब को आध्यात्म को अपनाना चाहिये। शिव बाबा की कुछ आर्शीवाद रही मुझपर रही कि मेरा गुस्सा समाप्त हुआ। अच्छे चिंतन से हमेशा ही सफलता मिलेगी। कहीं भी कुछ अच्छा हो रहा है तो उसकी प्रशंसा करें। अंतःकरण की शुद्धता एवं निर्भयता मीडिया की सबसे बड़ी जरूरत है। मीडियाकर्मी लोकमंगल का लक्ष्य लेकर चलें।

ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष **राजयोगी ओमप्रकाश** ने आज के अवसर पर कहा कि आज की दुनियाँ अज्ञानता और विकारो की काली छाया के अदंर ढक चुकी है। दुनियाँ के लोग अपने वास्तविक स्वरूप को पूरी तरह से भूल गये हैं। हमारे अदंर की चैतन्य सत्ता को हम जानते ही नहीं। इस बिगड़ी हुई स्थिति के लिये मीडिया भी कुछ हद तक तो जिम्मेवार है ही। मीडिया ने अशुद्ध साधन परोसे हैं लोगों के सामने। सुधार के लिये मीडिया को स्वयं के अंदर की चैतन्य सत्ता से जुड़ना होगा एवं समाज को भी शिक्षित करना होगा। ध्यानाभ्यास से ही समाधान निकलेगा।

ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक **राजयोगी आत्म प्रकाश** ने सम्मेलन को अपनी शुभकामनाएं दीं और कहा कि आप सभी आत्माओं को भगवान के घर पधारने का अवसर प्राप्त हुआ है, आप सभी अनेक सौभाग्यशाली हैं। समस्याओं से भरी यह दुनियाँ अपने ही कर्मो के कारण तकलीफ भुगत रही है। हमनें जैस बोया है वैसा ही हम काट रहे हैं। ५ विकारों में से कोई भी एक अगर हमारे कर्म में युक्त है तो सब अशुभ हो जाएगा। विकारों का कारण है हमारा देहाभिमान। देहाभिमान को मिटाकर हम समस्याओं से मुक्त हो सकते हैं।

मूल्यों के लिए मीडिया की पहल, भोपाल के राष्ट्रीय संयोजक **प्रो.कमल दीक्षित** ने अपना मुख्य वक्तव्य इस प्रकार से रखा। आपने कहा कि चिरायु , समृद्धि एवं खुशी के लिये संसार लंबे समय से प्रयत्न करता रहा है। इस प्रयास में जो बात उभर कर सामने आती है वह यह है कि समाज में आध्यात्म एवं मूल्यों के प्रतिरोपण के लिये, जिसके आधार पर उन तीनों लक्ष्यों की भी प्राप्ति हो पाएगी, मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है । ब्रह्माबाबा ने जब जीवन क सच को जान लिया तब जीवन की दिशा बदल दी। हम सभी को उस सच को जानने के लिये अपने आंतरिक स्वरूप को समझना होगा। धारणा, ध्यान एवं समाधि से ही समाज बदलेगा और समृद्ध, सुखी बनेगा।

भारतीय प्रेस परिषद के सदस्य एवं वरिष्ठ पत्रकार **राजीव रंजन नाग** ने उक्त अवसर पर सम्माननीय अतिथि के रूप में कहा कि आज का हमारा विषय मीडिया के स्वभाव से कतई मेल नहीं खाता। कोई भी मीडिया प्रबंधन शायद ही इस दिशा में काम करेगा। मगर व्यक्तिगत रूप से मैं यह मानता हूँ कि उसकी शांति के लिये उसका आध्यात्म से जुड़ना परमवाश्यक है। २१ जून को पूरी दुनियाँ में योग दिवस मनाया जाना एक बड़ी बात है। देश विश्व गुरु बनने की दिशा में आगे जा रहा है। सोशल मीडिया ने इसके बढ़ावे के लिये खास काम किया है। अनेक मुस्लिम राष्ट्रों ने यह समझा है कि योग एक वैचारिक प्रणाली है। यह सुंदर परिणाम है।

राजयोगिनी शीलू बहन ने योगाभ्यास करवाया और मन प्राणों को शांति की अनुभूति करवाई। ब्रह्माकुमारी चंद्रकला ने कार्यक्रम का संचालन किया। ब्रह्माकुमार सुशांत ने धन्यवाद ज्ञापन किया। (रपटःबी के गिरीश, ज्ञानसरोवर) ।